पूर्वी निर्झर

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

आठवाँ अंक

2020-22

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

पूर्व रेलवे, कोलकाता- 700 001

पूर्वी निर्झर

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

आठवाँ अंक

2020-22

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

पूर्व रेलवे, पाँचवाँ तल, न्यू कोयलाघाट बिल्डिंग

14, स्ट्रांड रोड, कोलकाता- 700 001

मुख्य संरक्षक का संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका "पूर्वी निर्झर" के आठवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं इस कार्यालय के सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ। हमारा कार्यालय "ग" क्षेत्र में स्थित है जो कि अहिंदी भाषी है, ऐसे कार्यालय से लगातार आठ वर्षों तक राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन निःसन्देह प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका का उद्देश्य लोगों के विचारों को राजभाषा में अविव्यक्ति देने के लिए एक मंच प्रदान करना है। यह पत्रिका कार्यालय कर्मियों का राजभाषा के प्रति न केवल लगाव अपितु उनके समर्पण को भी प्रदर्शित करती है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु कई योजनाएँ लागू की गयी हैं। आशा करता हूँ कि प्रति वर्ष इसी उत्साह एवं उपयोगी रचनाओं के साथ पूर्वी-निर्झर प्रकाशित होती रहेगी।

(श्री इन्द्र दीप सिंह धारीवाल)
महानिदेशक लेखापरीक्षा

संरक्षक का संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "पूर्वी निर्झर" का आठवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाएँ देकर सहयोग करने वाले समस्त कार्मिक एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पूर्वी निर्झर पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने का है।

मेरा अनुरोध है कि कार्यालय के सभी कर्मचारी एवं अधिकारी हिन्दी को आत्मसात करते हुए हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करें तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें। पत्रिका के प्रकाशन पर मैं अपनी सुभकामनाएँ देता हूँ एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

(कल्याण कुमार किर्तानीया)
निदेशक

संपादक का संदेश

अपने खुद के लेख को छपा देखना या अपने मन के भाव को अक्षरों में रूपांतरित होते देखने का मज़ा ही कुछ अलग है। कुछ लिखने के लिए - चाहे वह कविता हो या कहानी या निबंध, मैं "लिटल मैगज़ीन" पत्रिका के संपादक के पास दौड़ के जाता था, अगर वह छप सकती थी! या शायद किसी वॉल मैगज़ीन में जो हमेशा से हाथ से लिखी जाती थी।

आज समय काफी बदल गया है, प्रकाशन अब हाथों के मुट्ठी में है, केवल लिखने की देर है। पूर्वी निर्झर आज अपने सफ़ेद पृष्ठों के साथ आपके दरवाजे पर आ खड़ा है- लेखक या कवि के विचित्र लेखनी में चित्रित होने के लिए। इस बार भी वो कई रंगों में चित्रित हुई है। और भी रंगीन होने की संभावना भी रखता है। पूर्वी निर्झर के सफ़ेद पृष्ठ आपके लेख से और चित्रित हो, यही कामना करता हूँ।

सागरमय मण्डल

सागरमय मण्डल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा व प्रशासन

पूर्वी निर्झर

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री इंद्रदीप सिंह धारीवाल

महानिदेशक लेखापरीक्षा

पूर्व रेलवे, कोलकाता

संरक्षक

श्री कल्याण कुमार किर्तानीया

निदेशक लेखापरीक्षा

पूर्व रेलवे, कोलकाता

प्रधान संपादक

श्री सागरमय मण्डल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी राजभाषा व प्रशासन

संपादक मण्डल

श्री मनीष कुमार / पूर्व वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुकन्या दास/ कनिष्ठ अनुवादक

श्री मनोज कुमार पासवान/ कनिष्ठ अनुवादक

नोट :- संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारो से सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाकारों के विचार स्वतंत्र होते है।

अनुक्रमणिका

रचना	लेखक	पद	पृष्ठ संख्या
1. अप्रतिम मेलघाट	श्री सुधांशु मिस्त्री	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	6-10
2. मेरी बेटी	श्री दीपांकर आचार्या	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	11
3. वापसी	श्रीमति सुमना भट्टाचार्या	श्री संजीब कुमार कुंडु व.म.ले.प.अ की पत्नी	12
4. फायर फाँक्स	श्रीमति सुमना भट्टाचार्या	श्री संजीब कुमार कुंडु (व.म.ले.प.अ की पत्न)	13
5. फुरसत	श्रीमति सुमना भट्टाचार्या	श्री संजीब कुमार कुंडु (व.म.ले.प.अ की पत्नी)	14
6. मेरे पास धर्म	श्री सुबीर राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	15-16
7. पंक्षियों और प्रवाल के देश में (नारारा मरीन नेशनल पार्क)	श्री सुजीत कुमार दास	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	17-23
8. कर्मयोग	श्री प्रभाकर अग्रवाल	पूर्व कनिष्ठ अनुवादक	24-25
9. करोना की आत्मकथा	श्री प्रभाकर अग्रवाल	पूर्व कनिष्ठ अनुवादक	26
10. फ्यूज बल्ब	श्रीमती बिन्दु अस्तुतम पत्नी श्री मनीष कुमार	पूर्व वरिष्ठ अनुवादक, वर्तमान में हिन्दी अधिकारी	27-28
11. अवसाद/डिप्रेशन	श्री मनीष कुमार	पूर्व वरिष्ठ अनुवादक, वर्तमान में हिन्दी अधिकारी	29-30
12. सोशल मीडिया और हम	श्री मनीष कुमार	पूर्व वरिष्ठ अनुवादक, वर्तमान में हिन्दी अधिकारी	31-34
13. आधुनिकता की आड़ में परंपरा	श्री लोकेश कुमार मिश्रा	डाटा एंट्री ऑपेरेटर ग्रेड A	35
14. संदेश	श्री लोकेश कुमार मिश्रा	डाटा एंट्री ऑपेरेटर ग्रेड A	36
15. अवसाद से निजात	श्री लोकेश कुमार मिश्रा	डाटा एंट्री ऑपेरेटर ग्रेड A	37
16. पिशाच	श्री मनोज कुमार पासवान	कनिष्ठ अनुवादक	38

अप्रतिम मेलघाट

यात्रा का प्यासा मन मुझे हमेशा पहाड़ों और जंगलों की ओर आकर्षित करता है। इसलिए मैं साल में कम से कम तीन बार भारत के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करता हूं। लेकिन पिछले दो वर्षों से कोरोना महामारी के कारण इस यात्रा के ताल-मेल में रुकावट आई है। आज स्मृति के कोने में तैरती हुई एक विस्मयकारी जंगल की प्रकृति के बारे में मैं लिखूंगा। इस लेख के माध्यम से मैं उस सुंदर प्रकृति की गोद में दोबारा पहुँच जाऊंगा।

दिसंबर की सर्दियों के एक दिन मैं अपने परिवार के साथ गीतांजलि एक्सप्रेस ट्रेन में हावड़ा स्टेशन से रवाना हुआ। मुख्य गंतव्य था मेलघाट बाघ अभ्यारण्य। महाराष्ट्र के अमरावती जिले में सतपुड़ा पहाड़ियों के विशाल क्षेत्र में फैला मेलघाट वन है। मेलघाट बाघ अभ्यारण्य बाघों के अलावा, हिरण, भालू, तेंदुआ, बाइसन, ढ़ोले (जंगली कुत्ते) और अन्य प्रजातियों के जानवर और विभिन्न प्रजातियों के पक्षी स्वतंत्र रूप से घूमते हैं।

अगली दोपहर ट्रेन अकोला स्टेशन पर पहुंची। 7 दिनों के लिए एक निजी कार को अग्रिम रूप से बुक किया गया था। इसके अलावा, जंगल में विभिन्न स्थानों पर वन बंगला और जीप सफारी भी ऑनलाइन माध्यम से बुक की गयी थी। अकोला स्टेशन पर उतर कर हमने फोन कर ड्राईवर को बुला लिया। ड्राईवर पहले से ही हमारा इंतज़ार कर रहा था। हम कार में बैठकर "शाहनूर रेंज" के लिए निकल पड़े। कुछ देर चलने के बाद हम पहाड़ों से घिरे जंगल के बीचों-बीच खड़े वन-बंगले पर पहुँच गये। प्रकृति की गोद में बसे तार की जाली से घिरे इस खूबसूरत वन-बंगले को देखकर हम मंत्रमुग्ध हो गए।

जंगल की सुंदरता का आनंद लेने के लिए हम बंगले के अंदर के विशाल लॉन के पास कुछ देर बैठे रहे। पास में ही नारंगी नींबूओं का एक बग़ीचा था। वहाँ जानवरों का आगमन कभी भी हो सकता है। केयरटेकर आकर हमारा बैग बंगले के अंदर ले गया। नहाने और खाना खाने के पश्चात हमने विश्राम किया। रात को जब मैं खाना खाने गया तो आसमान की तरफ देखकर अचम्भित रह गया। गाढ़े नीले रंग का आकाश जैसे मेरे बहुत करीब था। तारे जैसे बहुत बड़े और चमकीले थे। ऐसा अद्भुत प्राकृतिक दृश्य कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। अत्यधिक ठंड और प्रचंड हवा थी। हम जल्दी से खाना खा कर सोने चले गये। अगले दिन सुबह 5 बजे जंगल सफारी का कार्यक्रम निर्धारित था।

सुबह 4:45 बजे गाइड ने दरवाजा खटखटाया। उसने दो कंबल देकर, सर्दी के कपड़े पहनकर कंबल ओढ़कर गाड़ी में बैठने को कहा। हमने वन-दफ्तर में पंजीकरण कराया, दस्तावेज जमा किए और कार में बैठ गए। चारों ओर अँधेरा। हमारी जीप गहरे जंगल को चीरती हुई और भीतर की ओर चलने लगी। पीछे कुछ और जीपों में अन्य यात्री। टेढ़े-मेढ़े रास्ते से चलते जा रहे है। जंगली जानवरों पर हम सजग नजर रखते हुए आगे बढ़े। जीप की रोशनी में कभी-कभी हिरण और बाइसन भी नजर आये। कुछ और गहन जंगल में आने के बाद सूरज की पहली किरण निकली।

जीप एक हरे घास के मैदान के पास आकर रुक गयी। हमने असंख्य चीतल-हिरणों को वहाँ घूमते देखा। तत्पश्चात, जीप एक बड़ी पहाड़ी के पास आकर रुकी। गाइड ने कहा- यहाँ कल काफी देर तक बाघ अपने शिकार के लिए आकर बैठा था। लेकिन कुछ देर तक रुकने पर भी बाघ देखने को नहीं मिला। अचानक, ड्राईवर ने तेज़ी से गाड़ी को भगाया। ऐसी खबर मिली कि पास के बड़े घास वाले जंगल में ही बाघ देखा गया था। हम जब तक वहाँ पहुंचे तब तक प्रायः 10 जीपें और भीड़ कर चुकी थी। अतः घास के जंगल में बाघ देख पाना संभव नहीं हो पाया।

इसके बाद, जंगल की कैंटीन में हम नाश्ता करके और गहन जंगल में जाने हेतु रवाना हुए। काफी सारे बाइसन (जंगली भैंसे) दिखे। जंगल के मनमोहक रूप ने हमें आकर्षित किया। अंत में, वापसी के रास्ते में, जंगल के एक छोर पर जहां कम पेड़-पौधे थे, वहाँ के पहाड़ी टीले जैसी जगह पर हमारी जीप सफारी शुरू हुई। आगे जा कर हमने देखा कि अलग-अलग जगहों पर चट्टान पर छोटे-छोटे टीले खोद कर थोड़ी दूरी पर लकड़ी के ऊंचे मचान बनाए गए थे।

गाइड ने कहा कि वह इलाका तेंदुओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर वन-विभाग से मचान को भाड़े पर लेकर रात बिताने से तेंदुए तथा अन्य जंगली-जानवर देखने को मिलते है। वे रात को शिकार करने आते हैं। सफारी के अंत में हम वन-बंगले पर लौट आए।

नहाने एवं भोजन के पश्चात थोड़ा विश्राम कर के हम शाम को सफारी पर निकल पड़े, गंतव्य था नारनाला फोर्ट। जंगल को चीरते हुए हम पहाड़ के ऊपर पहुंचे। एक विशाल क्षेत्र को घेर के यह प्राचीन किला जीर्ण-शीर्ण अवस्था में खड़ा है। काफी समय तक चारों और घूमने के बाद हमने किले में एक जगह पर बैरिकेडिंग कर के "प्रवेश निषिद्ध" का चिन्ह देखा। गाइड ने कहा की इस जगह पर दुर्ग के भीतर एक शेरनी अपने दो बच्चों के साथ है। इस समय वह खतरनाक है इसलिए रास्ता बंद किया गया है। शाम होने से पहले हम लौट आए। रात को विश्राम किया।

अगले दिन हमारी मंजिल थी - कोलखाज़। हमारी गाड़ी सुबह रवाना हुई। पहाड़ों के बीच से जंगलों को चीरते हुए घुमावदार सड़के। ऊपर, नीचे जहां तक नज़र जा रही थी सब घने हरे रंग के पेड़ों का घना जंगल। विभिन्न प्रकार के पक्षियों की आवाज़ें। सुंदर जंगल की अप्रतिम प्रकृति को मैं दो आँखों में भरके देखने लगा। बीच-बीच में गाड़ी रोक के हम व्यू पॉइंट पर रुककर प्रकृति के असीम सौन्दर्य का आनंद लेने लगे।

दोपहर को गाड़ी घने जंगल से घिरे पहाड़ी टीले के ऊपर "अपर कोलखाज़" नाम के वन-बंगले में आ पहुंची। गाड़ी से उतर कर हम बंगले के लॉन में बैठकर मुग्ध हो गए। नीचे से पहाड़ी नदी बह रही थी। एकदम अंत में घना जंगल। विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तओं की आवाज़ें। नैसर्गिक प्रकृति, अकेले, शांत। बंगले के लॉन में बैठकर पूरा दिन कब निकल जाएगा पता ही नहीं चलेगा।

नहाकर एवं भोजन के पश्चात हम शाम को हाथी की सवारी पर निकले। जंगल के पथ पर हाथी पर सवार होकर हमें बहुत मज़ा आया। शाम के आस-पास वापस लौट के हम फिर से बंगले के लॉन में बैठे। अपूर्व दृश्य। जंगली सांड, हिरण, मोर नदी में पानी पीने आए थे। हम दौड़ कर पास के वॉच टावर में जाके बैठ गए। धनेश, हरगीला पक्षी पास के एक ऊंचे पेड़ पर आकर बैठे थे। यह दृश्य कभी भूलने वाला नहीं है। बंगले का केयरटकेर हमें बुलाकर ले गया और कहा की शाम के बाद बाहर न निकले। बंगले के आस-पास लकड़बग्घा (हाइना) का आना

जाना रहता है। वास्तव में, हमने देखा की बंगले के लॉन में लकड़बग्घों के पानी पीने हेतु व्यवस्था की हुई थी। रात को खाने के बाद विश्राम किया।

अगले दिन हमारी मंज़िल "सिमादों" थी। कोलखाज़ से सिमादों पहुंचने में 20 मिनिट लगते हैं। हम लोग दोपहर के आस-पास पहुँच गए। नहाकर खाने के पश्चात वन-बंगले में विश्राम किया। यहाँ कंकड़ों के ऊपर से बहने वाली नदी के दृश्य की अपूर्व शोभा देखते ही बनती है। नदी के पार बंगले के आस पास विभिन्न जगह पर वॉच-टावर थे।

शाम को जीप सफारी पर हम निकल पड़े। यहाँ के जंगलों में प्रधानत: जंगली सांड, तेंदुआ, सांभर, ढोल एवं दूसरे जानवरों का आना-जाना था। गाड़ी जंगल के विभिन्न हिस्सों में घूमती रही। हमने शरपें चीतल, हिरण, ढोल (जंगली कुत्ते), मोर एवं असंख्य जंगली सांड देखे। एक जगह पर हमारी जीप एक झुंड जंगली सांड के पास जाके रुकी। खुशी से हम सेल्फ़ी लेने लगे। ड्राईवर ने जीप चालू कर दी और कहा सांड कभी भी आक्रमण कर सकता है। ये काफी खतरनाक होते हैं। सफारी के अंत में हम बंगले पर लौट आए।

अगले दिन हमारी मंज़िल थी "चिकोलदारा"। सुबह निकलकर पहाड़ी रास्ते से होते हुए दोपहर तक हम पहुँच गए। सरकारी टूरिस्ट लॉज में सामान रखकर गाइड के साथ स्थानीय यात्रा हेतु निकल पड़े। यहाँ पर चारों तरफ घाटी थी। जहां तक नज़र जा रही थी चारों ओर घाटी एवं पहाड़ों से बहते हुए झरने का पतला-सा निशान। गाइड ने कहा कि वर्षा ऋतु में यहाँ का सौन्दर्य और भी मनोरम होता है। चारों ओर पहाड़ों से असंख्य जलधाराएँ बहती हैं तथा एक अत्यंत सुंदर दृश्य दिखाई पड़ता है। इसीलिए यहाँ का नाम चिकोलदारा है।

सर्दी के मौसम में जाने के कारण हम इस मनोरम दृश्य को नहीं देख पाए थे। परंतु क्षितिज में विस्तृत पहाड़ी प्रकृति, घाटी को विभिन्न व्यू पॉइंट से देखकर हम मुग्ध हो गए थे। शाम को हम जंगल सफारी पर निकले। हमने काफी समय जंगल में बिताया। यहाँ पर तेंदुओं का काफी आना-जाना था। हमने सांभर, हिरण, मोर, चीतल हिरण, शार्पेन गिध्द देखा। शाम को बंगले में लौट कर हमने आराम किया।

अगले दिन वापसी की बारी थी। जंगल छोड़ कर आते वक़्त हमारा मन भारी हो गया। दोपहर तक हम अमरावती पहुंचे। वहाँ से बादनेरा स्टेशन से गीतांजली एक्सप्रेस ट्रेन में हम सवार हुए। अगले दिन आकर वापस उसी व्यस्त जीवन में लीन हो गए। लेकिन अप्रतिम मेलघाट की मनोरम प्राकृतिक सुंदरता मेरी स्मृति में बनी रह गयी।

सुधांग्शु मिस्त्री (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

मेरी बेटी

मेरी बेटी मेरी लक्ष्मी, घर में देती है रोशनी
मेरी बेटी में है समझ, सब को करती है जतन
मेरी बेटी करके खेती, फसल फैलाये मनन
मेरी बेटी सागर से भी मछली पकड़ लाती
मेरी बेटी शिक्षित, बेटी मेरी मान
वीर सेनानी बन के करती धरती का सम्मान
मेरी बेटी सेविका और बनती है डॉक्टर
देश की शोभा बढ़ाती है बन के खिलाड़ी
मेरी बेटी नम्र, धीर, शांत अतिशय
लेकिन शत्रु निधन करती हाथ में त्रिशूल है।
लड़ते रहो, जीतते रहो, चढ़ते रहो आकाश,
आपकी बेटी मेरी बेटी सबकी बेटी, शाबाश!!

दीपांकर आचार्या, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वापसी

2016 के रियो ओलंपिक में उनके कई प्रयास असफल हो गए थे । तब वो टूट गई थी , हताशाग्रस्त हो गई थी । उन्हे ऐसा लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया । पाँव लड़खड़ा रहे थे और आँख से आँसू टपक रहें थे । पोडियम पर ही उन्हें रोना आ गया था । बचपन में वो लड़की ऐसे ही वजन दार गट्ठर उठा लिया करती थी ,जो उनके भाई से भी नहीं उठता था । आप जानते हैं ये कौन हैं ये है मणिपुर की मीरा चाणु , जिन्होनें टोकियो आओलंपिक २०२१ में, देश का सर गर्व से ऊँचा कर दिया । उसने 49 किलो वर्ग में कुल २०२ किलो वजन उठाकर रजत पदक अपने नाम कर लिया । वह आलोम्पिक में भारतोलन में रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गई । 12 साल उम्र में वो तीरंदाज बनना चाहती थी एवं प्रशिक्षण के लिए मणिपुर की राजधानी इंफाल में स्थित भारतीय खेल प्राधिकरण केंद्र पहुंची थी। लेकिन वहाँ उन्हें इसके लिए कोई नहीं मिला । वेटलिफ्टर कुंजारानी देवी की वीडियो देखकर मिली । जब उन्होने प्रशिक्षण शुरू किया , तब वो रोज साइकिल से या लिफ्ट लेकर , अपने घर से प्रशिक्षण स्थल तक लगभग 20 कि0 मी0 का रास्ता तय करती थी । उनके पिता शौखोम कृति सिंह सरकारी नौकरी में थे, लेकिन उनका वेतन कम था और 6 बच्चो का पालन पोषण करने कि ज़िम्मेदारी थी । 2014 में ग्लास्गो में हुए कॉमनवेल्थ गेम में भी उन्होने रजत पदक जीता था । इसके बाद 2017 में वर्ल्ड चैंपियनशीप में उन्हें कांस्य पदक मिला ।

वह अपने देश गाँव और संस्कृति से बहुत प्यार करती है। जब वह विदेश जाती है तो वो यही का चावल ले जाती है और खाती है । वह योगाभ्यास करती है तथा अपने बैग में हमेशा भारत कि मिट्टी रखती है ।

2021 के मई में वह अमेरिका चली गई थी जहां उन्होने अपने कंधे के चोट का भी इलाज करवाया था । वाहा से वो सीधे टोकियो पहुँची थी आलंपिक में भाग लेने के लिए । उनका जन्म 8 अगस्त 1994 को मणिपुर के नोगपेक काकाचिंग गाँव में हुआ था । उनकी उम्र 26 वर्ष है । राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर पूरे देश ने उन्हे बधाई दी है। वह पूर्वोतर सीमांत रेलवे गुहाती में ओ एस दी ,स्पोर्ट्स के रूप में कार्यरत है। उनके इस सफलता पर रेलवे ने भी बधाई दी है उनको हनुमान चालीसा कंठस्थ है । रियो औलम्पिक कि विफलता के पश्चात उन्होने भगवान हनुमान और भगवन शिव कि भक्ति शुरू की तथा अपने कमरे में आज भी इन दोनों देवताओं की प्रतिमाएँ ज़रूर रखती हाँ। वो कहती है कि हनुमान चालीसा से उन्हें मानसिक मजबूती मिलती है।

सुमना भट्टाचार्या

(श्री संजीब कुमार कुंडु, व.म.ले.प.अ/सियालदाह की पत्नी)

फायर फॉक्स

लाल पांडा नेपाल ,भारत ,भूटान ,चीन, लाओस और म्यांमार के पहाड़ी जंगलो ने पाएँ जाते है । ये लाल रंग के होते है ,इनके शरीर पर सफ़ेद और काली धारियाँ होती है । कहा जाता ही कि फायर फॉक्स वेब ब्राउज़र का नाम बी लाल पांडा के नाम पर रखा गया । इनके पैर और पेट काले होते है । पुंछ पर छल्ले बने होते है । इनके पैरो के तलवो मे भी रोये होते है जो उचाई पर स्थिर इनके निवास स्थल मे इन्हे गर्म बनाए रखते है। यह "वाह" नाम की ध्वनि निकालता है ,जिसकी वजह से इसे समान्यतः वाह कहा जाता है । इनका वजन जाइंट पांडा के वजन का 5% होता है नर लाल पांडा अपने पिछले पैरो पर खड़े होकर और अपने पंजो से मुक्केबाजी करते हुए एक दूसरे से लड़ते है । अलग -अलग प्रकार की खुशबू का पता लगाने के लिए लाल पांडा अपने जीभों का इस्तेमाल करते है। आम तैर पर पेड़ो पर आराम करते पाए गए लाल पांडा को पेड़ो पर रहने वाला पशु माना जाता है। इनको पानी से नफरत होती । गर्म रहने के लिए लाल पांडा कभी- कभी गेंद की तरह गोल हो जाते है । ऐसा करने के लिए वह अपने सिर को अपनी छाती में और नाक को अपने पिछले पंजो के बीच छुपा लेते है । उनके पुंछ की लंबाई उनके पूरे शरीर की लंबाई के लगभग बराबर होती है । नर लाल पांडा अपने शिशुओं का ख्याल रखने में मदद नहीं करते । ये दुर्लभ जीव मुखी रूप से बांस खाते है और भोजन की तलाश में रोजाना लगभग 13 घंटे तक घूमते रहते है । ये सिर्फ मुलायम टहनियों और पत्तियों को ही खाते है । ये फल ,बेरिया, फूल कीड़े और पंक्षियों के अंडे भी खाते है । ये एक बार में एक से चार शिशुओ को जन्म दे सकते है । नवजात शिशु घुसर रोए से ढके होते है और उनका वजन 4से5 आऊस होता है । जन्म के समय उनकी आंखे और कान बंद होते है । करीब 1 साल में वे युवा हो जाते है । ये सवेरे और देर दोपहर मे सबसे अधिक सक्रिय होते है । शारीरिक हाव -भाव और अलग- अलग प्रकार की ध्वनियों के माध्यम से ये बातचीत करते है । इसमे सिटी बजाना भी शामिल है। ये जमीन पर बहुत धीरे धीरे चलते है । इनके प्रकृतिक शिकारी है -हिम तेंदुआ, धूमिल तेंदुआ और जंगली कुत्ते आदि । इंका वजन 7 से 14 पाउंड के करीब होता है और ये करीब 20से 23 इंच लंबे होते है पूंछको शामिल करने से इसकी लंबाई 12 से 20 इंच का और इजाफा हो जाएगा। इनके अन्य नाम है -बियर लेससर पांडा, पेटिट पांडा और पुनिया । इसके पंजे आंशिक रूप से खिचने योग्य होते है । इनमे एक व्स्तारित हड्डी होती है जो "आंगुठे" के जैसे होते है । सर्दियों में अक्सर लाल पांडा 12 से 14 वर्षो तक जीवित रहते है।

सुमना भट्टाचार्या

(श्री संजीब कुमार कुंडु, व.म.ले.प.अ/सियालदाह की पत्नी)

फुरसत

जिस दिन सारी रात बरसात हुई
मैंने एक झलक जिंदगी को देखा
फिर सवेरे उसको ढुढ़ती रही इधर -उधर
वह लुकाछुपी खेलती हुई अटखेलिया ले रही थी
मुसकुराते हुएँ पानी में कागज़ की कश्ती बहा रही थी
मैंने हँसी-मज़ाक में उससे पूछा
इतने दिन तू मुझे क्यू नजर नहीं आई ?
उसने कहा , मैं तो थी तेरे साथ हरदम
लेकिन तू तो पिछले तीस सालों से
जिंदगी की दौड़ भागी जा रही थी ।

सुमना भट्टाचार्या
(श्री संजीब कुमार कुंडु, व.म.ले.प.अ/सियालदाह की पत्नी)

मेरे पास धर्म

धर्म एक महत्वपूर्ण विषय है । पृथ्वी मे 4,300 धर्म हैं । इसमे 12 धर्म महत्वपूर्ण हैं, जैसे इसाई, हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, ताओ, यहूदी, कोन्फ़ुसियस वाद, जैन धर्म, वाहाई ,सिंतों, जोरोस्ट्रियनिज़्म, शून्य धर्म। भारत में चार महान धर्म को मानने वाले अनुयायी है। हिन्दू, सिक्ख, बौध्द, जैन, अभी भारत में 80% हिन्दू धर्म के लोग हैं । पूरी पृथ्वी मे अफ्रीका ,एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका , दक्षिणी अमेरिका और ओशेनिया नामक महादेश में विभिन्न जाति और धर्म हैं । हम भारतीय हैं , हमारी मातृभूमि भारत एक महान देश है, जिसमें पौराणिक सनातन धर्म को बहुत पुराना और महत्वपूर्ण धर्म माना जाता है । सर्वप्रथम स्वामी विवेकानंद ने 11 सितम्बर, 1893ई. में शिकागो शहर में हिन्दू धर्म से विश्व को परिचित करवाया । भारतवासी स्वामी जी को हिन्दू धर्म का प्रवर्तक मानते हैं । इसके पहले यूरोप, अमोरिका के अधिवासियों को हिन्दु धर्म व जाति के संबंध में कुछ भी मालुम न था । मेरा कहना है कि धर्म जैसे मनुष्य के लिए प्रधान है वैसे ही प्रत्येक वस्तु का भी एक धर्म होता है, सभी अपने धर्म का पालन करते हैं, धर्म खाने का और देखने का चीज नहीं है जो हम लोगो को दिखाए अपना धर्म अपना धर्म ही है उसे दूसरे धर्म से नहीं मिलाना चाहीए और बोलने की भी जरुरत नहीं अपना धर्म अपना अपना ही रहता है , किसी पर बल प्रयोग कर उसका धर्म परिवर्तन कराना सही नहीं है और ना ही उचित है ,पानी जिस जगह मे रखेगे वह उसी मे रह जयेगा । अपना धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहीए धर्म आसमान कि तरह है हम लोग जब आसमान कि तरफ देखते है तब सोचते है कि यह हमारे सर के उपर एक धाता कि तरह है लेकिन हम जितना उपर जाएगे तो देखगे वह कुछ भी नहीं है ।यह एक विशाल शुन्य है । आसमान कि तरह धर्म भी ऐसा ही है आसमान का शुरूवात और अंत नहीं है मेरा कहना है धर्म भी ऐसा ही है । आदमी जैसे इसको मानते ,वह कैसे शुरु हुआ यह बोलना बेवकुफी है जो जिसको जैसे मानते है, भगवान का कहना है कि तालाब के पानी को एक ही घाट से अलग अलग धर्म के लोग लेते है और कहते है जल पानी वाटर जो जैसा चाहते है उसे मानते है । हम लोग कहते है वैसे ही धर्म जो आदमी जैसे जिसको मानते है वैसा ही उसका धर्म है मनुष्य जाति का एक ही धर्म होना चाहीए ,हम मनहुश है, मान और हुश यह दोनो होने से विश्व मनुष्य जाति को प्रधान धर्म होना चाहीए पृथ्वी एक है, रवि एक है, धर्म भी एक होना चाहिए विभिन्न जाति और देश के आदमीयों का खुन का फर्क है शरीर का गठन एक है तो धर्म भी एक होना चाहिए, कि हमारा धर्म मनुष्य होना चाहिए । मनुष्य धर्म दूसरो को दिखायेगे उनकी साहायता कर आज पूरे पृथ्वी पर संकट छाया है । वह किसी एक धर्म के

लोगो को घायल नहीं कर रहे है बल्कि सभी धर्म के लोगो को घायल कर दिया ।वह लोगो को कही का नहीं छोडा,इस समय बहुत सारे लोग एक दूसरे को सहायता कर रहे है अभी धर्म का कोई विचार नहीं हो रहा है ,इन बातो को मानते हुए हम कहना चाहते है कि

मनुष्य के मानसिक्ता धर्म का प्रधान वैष्टि होना है एक दूसरे कि सहायता करना ही मनुष्य ता प्रधान धर्म होना चाहिए,जीव जगत का सबसे बुद्धिमान जीव होता है ,मनुष्य विचार विवेचना करना मनुष्य को ही आना चाहिए । धर्म का विभाजन करके हमलोग रहते है , धरती में हमलोगोको एक ही धर्म का पालन करना चाहिए, मनुष्य धर्म ।

सुबीर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक, आई टी अनुभाग

पक्षियों और प्रवाल के देश में

(नाराारा मरीन नेशनल पार्क)

गुजरात का उत्तर पश्चिमी एक शहर है जामनगर । वहां से 60 किमी. दूर कच्छ की खाड़ी में 183 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में 42 छोटे-बड़े द्वीपों के साथ समुद्री राष्ट्रीय उद्यान स्थित है। इन्हीं द्वीपों में से एक है नरारा, जो सड़क मार्ग से मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र में प्रवाल भित्ति है। उच्च ज्वार के दौरान अधिकांश द्वीप जलमग्न हो जाते हैं, जैसा कि अन्य समुद्र तटों पर देखा जा सकता है। लेकिन कम-ज्वार (भाटे) के दौरान प्रवाल भित्तियाँ अवरुद्ध हो जाती हैं और समुद्र का पानी धीरे-धीरे नीचे चला जाता है। कई प्रकार के पक्षी पानी में फंसे केकड़ों, मछलियों और अन्य समुद्री जीवों को खाने के लिए इकट्ठा होते हैं। प्रवाल भित्तियों के बीच घुटने तक गहरे पानी में चलते हुए कोई भी व्यक्ति समुद्री जीवन से भरे इस देश को देख सकता है।

एक दिन इस अद्भुत देश को देखने के लिए मैंने भोर में जामनगर से एक कार भाड़े पर ली। मेरा मुख्य उद्देश्य - क्रैब प्लोवर और ऑयस्टरकैचर - इन दो पक्षियों को देखना और साथ ही समुद्री जीवन से भी परिचित होना था।

एक रात पहले, मुझे होटल में बताया कि कम-ज्वार (भाटा) सुबह पांच बजे शुरू होगा। सुबह आठ बजे नरारा पहुंचना होगा क्योंकि पक्षियों और समुद्री जीवन दोनों को एक साथ देखने का यह आदर्श समय है। यदि आप पहले आते हैं, तो आप पक्षियों को देखेंगे, लेकिन समुद्री जीवन नहीं देख पायेंगे और यदि आप बाद में आते हैं, तो आप न तो पक्षी देख पायेंगे और न ही समुद्री जीवन।

सुबह साढ़े छह बजे अहमद नाम का ड्राइवर कार से आ पहुंचा। उनसे बात करते हुए मैंने महसूस किया कि उन्हें कई बार नाराारा जाने का अनुभव है। मुझे पानी को धकेलते हुए छोटे-बड़े पत्थरों से गुजरना होगा इसलिए मैंने स्नीकर्स पहने। लेकिन होटल में मुझे रिसेप्शन पर रोक लिया और कहा, पानी में भीगे हुए जूते इतने भारी हो जाते हैं कि आप ज्यादा देर तक चल भी नहीं सकते। मैंने अपने जूते उतार दिए और हवाई चप्पलें पहन लीं। शहर को छोड़कर कार सरखेज-ओखा राष्ट्रीय राजमार्ग 946 पर चल पड़ी। रिलायंस ऑयल रिफाइनरी को बाईं ओर छोड़कर, हम एस्सार ऑयल रिफाइनरी के शुरू होने से ठीक पहले स्टेट हाईवे 6 पर दाईं

ओर मुड़ गये। काफी दूर जाने के बाद सड़क दो हिस्सों में बंट गई। वाडीना के बंदरगाह की ओर बाएं मुड़ना होता है और नारारा मरीन नेशनल पार्क की ओर दाएं।

मुझे एहसास हुआ कि मैं समुद्र के करीब आ गया था। मुझे एक कंक्रीट के खंभे पर डेजर्ट व्हिटियर चिड़िया दिखाई दी। हमने चिड़िया के ठीक बगल में कार खड़ी की और अंदर बैठकर ही तस्वीरें लीं। मुझे याद आया, कुछ साल पहले सर्दियों में, एक डेजर्ट व्हिटियर राजारहाट आया था। कुछ फ्लेमिंगो दोनों तरफ दलदल में बिखरे हुए थे। मैं मरीन नेशनल पार्क के गेट पर आ गया। यहाँ अकबर मेरा गाइड होगा जो मुझे पार्क दिखाएगा। हम पहले ही फोन पर बात कर चुके थे। जैसे ही वह आया, मैं निश्चित होना चाहता था कि - क्रैब प्लोवर और ऑयस्टरकैचर देखा जाएगा? अकबर ने क्रैब प्लोवर के बारे में आश्वासन दिया और कहा कि इस मौसम में अभी तक ऑयस्टरकैचर नहीं देखा गया है। किस्मत अच्छी हुई तो मुलाकात हो सकती है।

पार्क में प्रवेश करते ही मैंने अकबर से कहा कि अगर हमारे पास समय है तो मैं पहले पक्षियों को देखूंगा और फिर समुद्री जीवन। क्योंकि एक साथ दोनों संभव नहीं है। यह सुनकर अकबर ने लोहे की छड़ी को अपने हाथ में लिया और अपनी कमीज के कॉलर से उसकी पीठ पर लटका दिया। उस समय मुझे समझ नहीं आया कि छड़ी लेना क्यों आवश्यक है। गेट से 500 मीटर चलकर मैंने देखा कि मैं दूसरी दुनिया में आ गया हूं। दूर से समुद्र दिखाई देता है और सामने गीले समुद्र तट पर असंख्य पक्षियों की भीड़ है। सैंड प्लोवर से लेकर गॉल, टर्न, ह्यूम्ब्रेल, ग्रे-हेरॉन, ग्रेट हेरॉन, पैंटेड स्टॉर्क, वेस्टर्न रीफ एग्रेट, रफ, टर्नस्टोन - क्या-क्या नहीं था वहाँ ! हालांकि, संख्या में, ऐसा लगता है, ह्यूम्ब्रेल और वेस्टर्न रीफ एग्रेट सबसे ज्यादा हैं।

अकबर मेरी दूरबीन से क्रैब प्लोवर ढूंढ रहा था। मैंने अपने सामने एक सैंड प्लोवर पाया और जैसे ही मैं इसे कैमरे में कैद करने वाला था कि मैंने देखा कि मेरे सामने एक बड़ा पलास गॉल बैठा है। मैं प्लोवर को छोड़कर गॉल की तरफ मुड़ा। तस्वीर लेते ही वह उड़ गया। बेशक, कुछ फ्लाइट शॉट भी लिए थे। यह पलास गॉल दूसरे पक्षियों के मुंह से खाना छीनने में बहुत ही कुशल है लेकिन यह देखने में बेहद खूबसूरत है। वेस्टर्न रीफ एग्रेट और ह्यूम्ब्रेल चारों ओर उड़ रहे हैं। यह फ्लाइट शॉट लेने के लिए आदर्श स्थान था। मेरा कैमरा क्लिक करता रहा।

उसी समय अकबर ने मुझे दूरबीन से विशेष दिशा में देखने को कहा। दूरबीन में देखते हुए मुझे प्रवाल भितियों पर क्रैब प्लोवर का एक बड़ा झुंड दिखाई दिया लेकिन वह बहुत दूर

समुद्र की ओर था। अकबर हँसा और कहा, 'वे कुछ घंटों के लिए उस जगह से नहीं हटेंगे। हम पानी पार करेंगे और वहां जाएंगे।' 'चलो, चलो, अब चलते हैं'।

'लेकिन मेरे दायीं तरफ वे क्या हैं? तीन काले और सफेद पक्षियों की चमकीली नारंगी चोंच हैं?' अकबर ने मेरे हाथ से दूरबीन छीन ली और उन पर नजर रखने लगा। उत्साहित होकर

उसने कहा, 'यह यूरेशियन ऑयस्टरकैचर है! एक, दो, तीन पक्षी'! लेकिन वे लोगों को अपने पास नहीं आने देते। तुम आगे बढ़ो और अकेले तस्वीरें लो।' मैं पास से तस्वीरें लेने के लिए आगे बढ़ने लगा। मुझे आते देख तीनों पंछी दूर उड़ गए। मैं बहुत खुश हुआ - पांच मिनट के अंतराल में क्रैब प्लोवर और ऑयस्टरकैचर!

(यूरेशियन ऑयस्टरकैचर)

अब प्रवाल भित्तियों पर चलना शुरू किया। पैरों के नीचे समुद्र का साफ पानी - कितने किस्म के प्रवाल, मछलियाँ और ऑक्टोपस भी! लेकिन अब बेहतर दिखने का कोई उपाय नहीं है। मुझे पत्थरों पर संभल कर कदम रखना है। फिसलते ही कैमरा पानी में गिर जाएगा। घुटने के ऊपर या नीचे कहीं पानी। काफी चलने के बाद अकबर के प्रपोजल के अनुसार थोड़ा आराम किया गया। ।

प्रवाल (मूंगा)

(क्रैब प्लोवर)

क्रैब प्लोवर अब अच्छे लग रहे हैं। लेकिन अभी बहुत कुछ जानना बाकी है। प्रवाल भित्तियों की दरारों के माध्यम से पानी धीरे-धीरे समुद्र में उतरता है। क्रैब प्लोवर छोटे केकड़ों की तलाश में उन जगहों पर बैठे हैं जहां से पानी नीचे जाता है। दूरबीन से मैं उन्हें खाते, चलते और बहस करते देखता हूं। आसमान में एक ऑस्प्रे तैर रहा है। क्रैब प्लोवर डर के मारे भाग सकते हैं।

अकबर ने मुझे बाकी रास्ते अकेले जाने का सुझाव दिया क्योंकि एक ही समय में दो लोगों को जाने की अनुमति नहीं है। मैं पास से तस्वीरें लेने की उम्मीद में धीरे-धीरे आगे बढ़ा। मैं उनके बहुत करीब आ गया। मैं सोच भी नहीं सकता था कि क्रैब प्लोवर मुझे इतने करीब आने दे सकते हैं। मैंने कैमरे से उनके अलग-अलग पोज की तस्वीरें लीं। श्रीलंका और मालदीव के उत्तरी तट पर रहने वाले ये पक्षी सर्दियों में कच्छ की खाड़ी और पाकिस्तान के दक्षिणी तट पर चले

जाते हैं। आधे घंटे तक उन्हें देखने के बाद मैं वापस लौट आया।

वापस जाते समय अकबर ने पानी के नीचे अजीबोगरीब जीवों की दुनिया दिखाना शुरू कर दिया कि कौन किस तरह का प्रवाल है! कॉलर के पिछले हिस्से में टंगी लोहे की छड़ी अब अकबर के हाथ में थी। वह समय-समय पर पत्थर को उल्टा करके देखता है कि कहीं कोई छिपा हुआ जीव तो नहीं है। ऐसा करने से मुझे ब्रिशोल्ड स्टारफिश मिली।

ब्रिशोल्ड स्टारफिश

एक छोटे से ऑक्टोपस ने जैसे ही मुझे देखा, वह काला हो गया और चट्टानों में छिप गया। जैसे ही अकबर को इस बारे में बताया, उसने पत्थर को छड़ी के काँटे से उलट दिया, वह ऑक्टोपस को पकड़कर ले आया। पहली बार ऑक्टोपस को इतने करीब से देखा। ऑक्टोपस अकबर का हाथ पकड़े हुए था। मैंने जल्दी से कुछ तस्वीरें लीं और अकबर से कहा कि इसे पानी में छोड़ दो। अब वातावरण काफी रोमांचकारी लग रहा था।

मैंने एक बैंगनी सी-अर्चिन देखा। क्या अद्भुत रंग है। यह सी-अर्चिन इस पार्क में कम ही देखने को मिलता है। एक समुद्री ककड़ी (सी कुकुम्बर) अपने नारंगी जाल के साथ एक चट्टान के खांचे में फंस गई और वह पानी की धारा के साथ आगे-पीछे हो रही थी। यह दृश्य आश्चर्यजनक और सुंदर था। मुझे बहुत सारे समुद्री एनीमोन भी मिले। लेकिन आप अंडरवाटर कैमरे के बिना अच्छी तस्वीरें नहीं ले सकते। इसके अलावा, समुद्री पेड़, शैवाल और केल्प हैं।

बैंगनी सी-अर्चिन

(समुद्री ककड़ी- सी कुकुम्बर)

(समुद्री एनिमोन)

मुझे महसूस हुआ कि पैर के दबाव से भी कुछ छूट रहा है। अकबर ने झट से अपना हाथ डुबोया और एक पफर मछली उठाई। यह मछली देखने में बहुत ही खूबसूरत होती है। लेकिन जब यह डर जाती है तो अपने शरीर में पानी और हवा भर लेती है और अपने को मरी हुई मछली की तरह दिखाती है। दुश्मन को डराने या अपना बचाव करने का बहुत ही अनोखा तरीका है।

समुद्री जीवन देखकर हम किनारे पर आ गए। ऐसा लग रहा था जैसे मैं पिछले तीन घंटे से किसी दूसरी दुनिया में था। यह दुनिया जितनी खूबसूरत है उतनी ही रोमांचक भी। इसी बीच मुझे याद आ गई अगले दिन सुबह साढ़े दस बजे कोलकाता जाने वाली ट्रेन की।

नरारा पार्क में समुद्री एनिमोन (Sea-Anemon)

यूरेशियन ऑयस्टरकैचर

पफर मछली

फोटो: सुजीत कुमार दास

सुजित कुमार दास, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कर्मयोग

क्या हम इन शाश्वत प्रश्नों पर विचार करते हैं? हमारे जीवन में दुःख का कारण क्या है? हमें चिन्ता क्यों होती है? क्यों हमारा मन अशांत, निराश, असंतुष्ट हो जाता है? हमें भय क्यों होता है?

चलिये अब इन प्रश्नों के उत्तर पर गौर करते हैं। इन सभी प्रश्नों के उत्तर के मूल में हमारी इच्छा का होना है- कि मुझे यह मिल जाए और यह प्राप्त हो जाए अथवा यह प्रतिकूल परिस्थिति कभी न आए या कोई अप्रिय घटना कभी न घटे, इत्यादि। अभीष्ट की प्राप्ति में हमें आनन्द होता है। तो वहीं, यदि अभिलाषाओं के विपरीत कोई घटना घटे, तो हमें दुःख, विषाद, चिन्ता, भय आदि होते हैं। क्या हम कभी अपने लक्ष्य के बारे में सोचते हैं? मेरी मंज़िल क्या है? मुझे कितनी दूर जाना है? क्यों जाना है? वस्तुतः मैं क्या खोज रहा हूँ, क्या पाना चाहता हूँ? क्या पैसा कमाना ही हमारा लक्ष्य है? अपने आप से हमें ये सवाल करने चाहिए। हम पूर्ण संतोष तथा सदैव बने रहने वाला आनन्द कितने करोड़ में खरीद सकते हैं ! कुछ सरल उदाहरण ले लीजिये। जब तक सरकारी नौकरी नहीं मिली थी- बस एक सरकारी नौकरी मिल जाए, फिर देखना ! मैं यह करूंगा, वह करूंगा, ये खरीद लूंगा इत्यादि। आज तो हमें सरकारी नौकरी मिल चुकी है। पर क्या हम संतुष्ट, प्रसन्न, एवं सुखी हैं? क्या हम दुःख, चिन्ता, भय, विषाद से रहित हैं? उत्तर है नहीं। तो क्यों? ऐसा क्यों?

उत्तर है आसक्ति। आसक्ति ही बंधन का मूल कारण है। इच्छित के वियोग एवं अवांछनीय के संयोग से हमें दुःख प्राप्त होता है। एवं ऐसी अप्रिय परिस्थिति की संभावना पर विचार कर के हमें भय, चिन्ता आदि होते हैं। त्रिगुणात्मक प्रकृति के सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ही आपस में बरत रहे हैं। इंद्रियाँ विषयों में रमती हैं। मन को प्रिय लगने वाले विषयों के बारे में निरंतर सोचते-सोचते उनमें हमारी आसक्ति हो जाती है।

चलिये अब समाधान की ओर बढ़ते हैं। इस संदर्भ में गीता का यह श्लोक हमारा मार्गदर्शन करेगा - "हे पार्थ! इसलिए तू निरंतर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्य कर्म को भलीभाँति करता रह। क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।"

[अध्याय-3, श्लोक संख्या-19]

(उपरोक्त श्लोक गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित हिन्दी अनुवाद संस्करण से उद्धृत है)

चार पुरुषार्थ कहे गए हैं- अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष। अपने धर्म में स्थित हो कर उपार्जन किया हुआ अर्थ (धन) काम (भोग-विलास) की प्राप्ति को धर्ममय बनाता है। परंतु मोक्ष हेतु हमें निरपेक्ष होकर अपने धर्म का पालन करना होगा, अर्थ एवं काम प्राप्ति में आसक्त होकर नहीं। कर्म करने पर फल तो स्वतः मिलेगा ही। मुख्यतः अनुकूल और कभी-कभी प्रतिकूल फल प्राप्त होता है। पर फल मिलता ज़रूर है। हमारे चाहने या न चाहने से मिलने वाले फल पर कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क पड़ता है हमारे करने या न करने से।

'इन परिस्थितियों में मेरा यही कर्तव्य है', ऐसा सोचते हुए, सृष्टिचक्र का पालन करने हेतु, "लोकसंग्रह" हेतु, परमात्मा में श्रद्धा रखते हुए, निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए। ऐसा स्थितप्रज्ञ पुरुष निःसन्देह शाश्वत शांति एवं पूर्णानन्द को प्राप्त होता है। ऐसा कर्मयोगी सफलता-विफलता, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, जन्म-मृत्यु आदि द्वन्द्वों में समत्व बुद्धि धारण करते हुए अंततोगत्वा ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो जाता है।

"सिद्ध्य-सिद्ध्यो: समो भूत्वा, समत्वम योग उच्यते॥"

[अध्याय-2, श्लोक संख्या-48]

श्री प्रभाकर अग्रवाल, कनिष्ठ अनुवादक

कोरोना की आत्मकथा

वुहान की निकाल ली जान,
मैं हूँ बड़ा शैतान !
अब आए कोई तूफान या आम्फ़ान,
मैं अडिग, मैं हूँ कोरोना महान !

चाहे हो अमेरिका, फ़्रांस या इटली,
या हो इंग्लैंड, ब्राज़ील या जर्मनी,
सबकी तोड़ डाली कमर, हड्डी-पसली,
चिता, कब्र, श्मशान बन गए असली ॥

सबके मन में हूँ मैं व्याप्त,
घर को बना दिया अस्पताल,
साँसों को कर दिया सिलेन्डर में कैद
मुख पर मास्क, घर में उमरकैद ॥

श्री प्रभाकर अग्रवाल, कनिष्ठ अनुवादक

फ्यूज़ बल्ब

दिल्ली शहर से सटे गौतमबुद्ध नगर में एक आईपीएस अफसर रहने के लिए आए जो हाल ही में डीआईजी के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। ये बड़े वाले रिटायर्ड आईपीएस अफसर मोटे लैंस का काला चश्मा लगाए हैरान परेशान से रोज शाम को पास के पार्क में एक छोटी स्टिक लेकर टहलते हुए अन्य लोगों को तिरस्कार भरी नज़रों से देखते और किसी से भी बात नहीं करते थे।

एक दिन एक कोलोनी के बुज़ुर्ग के पास शाम को गुफ़्तगू के लिए बैठे और फिर लगातार उनके पास बैठने लगे लेकिन उनकी वार्ता का विषय एक ही होता था - कि जब मै भिन्न भिन्न जिलों में एसएसपी हुआ करता था। दरोग़ा, सिपाही और इंस्पेक्टर को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर देता था। सरकारी बंगला होता था। 5-6 खाना बनाने वाले, कपडे धोने वाले होते थे। कई-कई गाड़िया बंगले पर खड़ी होती थी। जूनियर अधिकारी मेरे सामने सावधान में खड़े होकर सर सर किया करते थे। जिस थानेदार पर मेरी नज़र टेढ़ी हो जाती थी उसको रातों रात लाइन हाज़िर कर देता था। सिपाही, दीवान को 14 दिन से कम की सज़ा नही देता था।पूछो मतकि दरोग़ा और इंस्पेक्टरों को कितनी मिसकंडक्ट दी हैं और कितनो के खिलाफ सेक्शन 7 की कार्यवाही कर चुका हूं। वो अलग बात हैं कि मैं अधीनस्थों को अच्छे कार्य के लिए पुरस्कार भी देता था। यहां तो मैं मजबूरी में आ गया हूं, मुझे तो दिल्ली के पॉश इलाके में बसना चाहिए था।

वो बुजुर्ग प्रतिदिन शांतिपूर्वक उनकी बातें सुना करते थे। परेशान होकर एक दिन बुजुर्ग ने उनको समझाया - आपने कभी फ्यूज बल्ब देखे हैं? बल्ब के फ्यूज़ हो जाने के बाद क्या कोई देखता है कि बल्ब किस कम्पनी का बना हुआ था या कितने वॉट का था या उससे कितनी रोशनी या जगमगाहट होती थी? बल्ब के फ्यूज़ होने के बाद इनमे से कोई भी बात मायने नहीं रखती है। लोग ऐसे बल्ब को कबाड़ में डाल देते हैं। है कि नहीं?

फिर जब उन रिटायर्ड आईपीएस अधिकारी महोदय ने सहमति में सिर हिलाया तो बुजुर्ग फिर बोले - रिटायरमेंट के बाद हम सब की स्थिति भी फ्यूज बल्ब जैसी हो जाती है। हम कहाँ काम करते थे, कितने बड़े/छोटे पद पर थे, हमारा क्या रुतबा था, यह सब कुछ भी कोई मायने नही रखता। मैं सोसाइटी में पिछले कई वर्षों से रहता हूं और आज तक किसी को यह नहीं बतायाकि मैं दो बार संसद सदस्य रह चुका हूं। वो जो सामने वर्मा जी बैठे हैं, रेलवे के महाप्रबंधक थे। वे सामने से आ रहे सिंह साहब सेना में ब्रिगेडियर थे। वो मेहरा जी इसरो में डिप्टी चीफ थे। वो

जो सामने मोटा चश्मा पहने आ रहे है, त्यागी जी हैं मेरठ यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर रहे है।ये बात भी उन्होंने आज तक किसी को नहीं बताई है, मुझे भी नहीं पर मैं जानता हूं सारे फ्यूज़ बल्ब करीब - करीब एक जैसे ही हो जाते हैं।बल्ब चाहे जीरो वॉट का हो या 50 या 100 वॉट हो या फ्यूज टयूब लाइट! कोई रोशनी नही तो कोई उपयोगिता नहीं!

उगते सूर्य देव को जल चढ़ा कर सभी पूजा करते हैं। पर डूबते सूरज की कोई पूजा नही करता। कुछ लोग अपने पद को लेकर इतने अहंकार में होते है कि रिटायरमेंट के बाद भी उनसे अपने अच्छे दिन भुलाए नहीं भूलते। वे अपने घर के आगे नेम प्लेट लगाते हैं - रिटायर्ड आइएएस, रिटायर्ड आईपीएस, रिटायर्ड पीसीएस, रिटायर्ड जज आदि - आदि। अब ये रिटायर्ड आईपीएस की कौन-सी पोस्ट होती है भाई?

माना कि आप बहुत बड़े आफिसर थे, बहुत काबिल भी थे, अधीनस्थ कर्मचारियों को ढूंढ-ढूंढ़ कर दण्ड देते थे।बात बात पर उन्हें लाइन हाज़िर कर देते थे।उनका बिना वेतनअवकाश स्वीकृत कर देते थे। साहब पूरे महकमे में आपकी तूती बोलती थी पर अब क्या? आँखे कमजोर हो चुकी हैं। शरीर बूढ़ा हो गया है।जीवन के अन्तिम पड़ाव पर हो।अब यह बात मायने नहीं रखती है कि आप क्या थे!बल्कि मायने रखती है कि पद पर रहते समय आप इंसान कैसे थे? आपने कितनी जिन्दगियों को छुआ?कितने अधीनस्थ कर्मियों के साथ न्याय किया....आपने आम लोगों को कितनी तवज्जो दी...समाज को क्या दिया...कितने लोगों की मदद की ?पद पर रहते हुए जब कभी आपको घमंड आये तो बस याद कर लीजिए कि एक दिन सबको फ्यूज होना है।

श्रीमती बिन्दु अस्तुतम
पत्नी श्री मनीष कुमार, हिन्दी अधिकारी

अवसाद / डिप्रेशन

आधुनिकता से उपजी जरूरतों ने नए नए आविष्कार हमसे भले करवाए हों लेकिन नई नई बीमारियां भी दे दीं। अकेलापन और डिप्रेशन आधुनिकता की ही फसल है।

हमें तरक्की प्यारी लगी हम काम मे उलझे और ऐसा उलझे कि जब वापस लौटे तो खुद को अकेला पाया। अच्छा दिक्कत इतनी ही नहीं है, हम ख़ुशी भी अकेले सेलिब्रेट करने लगे हैं। जब आप ख़ुशी अकेले मनाएंगे तो आपके ग़म कौन साथ मे बांटेगा? वो भी तो अकेले ही झेलना पड़ेगा। उसी ग़म की उपज है, डिप्रेशन।

आदमी जब हतोत्साहित होता है तो वो अपने आस पास के लोगों को खोजने लगता है और वहाँ खुद को जब अकेला पाया तो फिर हो गया डिप्रेस्ड। डिप्रेशन के बाद वही रस्सी, पंखा और गले वाली क्रांति।

अच्छा इसकी जिम्मेदारी हमारी छोटी छोटी आदतों की भी है। हमे प्राइवेसी भी चाहिए और हमें डिप्रेशन में भी नहीं जाना। मतलब हमारे राज कोई जाने भी न, दुख किसी को बताएं भी न और हम भारी भी न महसूस करें। दोनों चीजें नहीं हो सकती न भाई, नहीं होगी।

अब देख लो भइया कल्चर ही ऐसा बन गया है अब औपचारिक टाइप का। लोग खुल के कहने और बोलने से परहेज करने लगे हैं। यहाँ तक की जोर से हँसना भी मैनर्स के बाहर माना जाने लगा है।

एक बिल्डिंग है उसमें कुछ फ्लैट हैं, जिनमे रहने वालों से आपका लिफ्ट तक का सम्बंध है। सोसायटी बची ही नहीं है। सोसायटी पर जोक्स, मीम्स बड़े बने हैं कि सोसायटी टोकती है, व्यंग्य करती है। लेकिन सोसायटी आपको कभी अकेला नहीं पड़ने देती है, ये बात भी स्वीकारें और ये भी मानें कि हम अपना जोन मेंटेन करने के चक्कर मे सबसे कटते जा रहे हैं जिसका नतीजा ये हो रहा है।

बेटे को बाप का कमरे में अचानक आना भी खल रहा है। मम्मी से ज्यादा देर बात नहीं करते अब लड़के। दोस्त सोशल मीडिया पर ज्यादा हैं, निजी जिंदगी में कम। सामने से तो भड़ास निकल ही नहीं रही। लिखने वाले तो खैर मान लो लिख कर असंतुष्टि मिटा लेते हैं।

अच्छा एक और वजह है, सख्त अभिभावक नाम की चीज अब बची ही नहीं है। बिना बात के डांटने गरियाने वाले बाप रह नहीं गए हैं। बेइज्जती की आदत डलवाने वाले पिता ही होते हैं लेकिन पिता तो ढल गए। अब आप बताओ लड़का अगर असफल हो कर लौटे तो क्या करेगा? वैसे जलील करते रहते तो चलो पापा की तो आदत है, बोल के अवॉयड कर जाता है। अभी क्या है याद ही नहीं है पिता ने जलील कब किया था? कटा कब था?

फेल्योर और बेइज्जती की आदत हमेशा से बच्चों को देनी चाहिए। वरना अचानक से डांट मिलेगी तो वो उसे प्रतिष्ठा का विषय ही बनाएगा भले आप उसके बाप ही क्यों न हो।

रिश्तेदारों के ताने भी कम होने शुरू हो गए हैं। कुल मिला के जिन्दगी आसान बनाने के चक्कर मे, जीवन बिन रोकटोक चलाने के चक्कर मे हम जीना मुश्किल किये जा रहे हैं। बड़ा कुछ है जो केवल घरवालों के ताने से ठीक हो जाता है। लेकिन हम उसे ईगो से जोड़ कर अब उनसे ही दूर होने लगे हैं।

फिर एक समय असफल होने के बाद जब घरवालों के कंधे की जरूरत पड़ती है तो हम किस मुंह से जाएं वाले धर्मसंकट में फँस लेते हैं। कारण ये कि अब तक तो हम उन्हें अवॉयड करते आए हैं तो हम रस्सी, पंखा और बेस्ट एंगल ढूंढने लगते हैं।

जरूरत से कम जीना ईश्वर का अपमान है। इसे सबको समझना चाहिए। मेरे एक रिश्तेदार का छोटा सा लड़का है। गर्मी की छुट्टियों में घर आया लेकिन वो किसी से बात ही न करे। साथ के बच्चों का मुंह नोच लेना, काट लेना आदि हरकतें करे। कारण वही फ्लैट कल्चर। आदत ही नहीं है न बात की। डेढ़ महीने के करीब गांव में रहा और अच्छा खासा बात करने लगा। जब बात करने लगा तो खीझ मिटी और मुंह नोचना या काटना छोड़ दिया।

कहने का इतना ही मतलब है बेशक आपको अकेलापन पसन्द हो, लेकिन घण्टे भर को ही सही बाहर निकलिए। लोगों से मिलिए बात करिये। अभी आप के पास कोई परेशानी नहीं है तो अकेलापन रास आ रहा, कल जब आप परेशान होंगे तो यही स्थिति आपसे ही आपका गला कसवा देगी।

घरवाले बेशक आपको सैकड़ों काम दे डालें, सोसायटी आप पर ताने कस लें लेकिन इतना तय है कि ये आपको मरने तो नहीं देंगे वो भी इस मुए डिप्रेशन से।

मनीष कुमार
पूर्व वरिष्ठ अनुवादक, वर्तमान हिन्दी अधिकारी, स्थानांतरित

सोशल मीडिया और हम

आज का समय इंटरनेट और सोशल मीडिया का है। आज देश दुनिया में कुछ भी घटित होता है सेकंडों में उसकी खबर आपको मिल जाती है। अब आपको किसी बड़ी घटना को जानने के लिए न्यूज़ चैनल देखने की जरूरत नहीं। सोशल मीडिया वैबसाइट ट्विटर, फेसबुक और मेसेंजर सर्विस व्हाट्सप, हाइक, वाइबर आदि से उसकी खबर तुरंत आपके पास पहुँच जाती है। इसके लिए जरूरत है तो बस एक स्मार्ट फोन की। हर तरह की खबर, विडियो, चुट्कुले, शायरी आदि सोशल मीडिया की बदौलत हर वक़्त इधर से उधर होती रहती हैं। दूर रहकर भी परिवार एवं मित्रों का समूह बनाकर हर पल एक-दूसरे के संपर्क में बने रहते हैं।

आज सोशल मीडिया अपनी बात कहने का और बुराई व अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का और समर्थन जुटाने का सबसे सस्ता और तीव्र माध्यम बन गया है। दिल्ली के निर्भया बलात्कार काण्ड के विरोध में नौजवानों ने जो आंदोलन चलाया उसकी व्यापकता सोशल मीडिया के कारण ही संभव हुई।

वर्तमान केंद्र सरकार ने भी पिछले आम चुनाव में जो शानदार जीत दर्ज की थी उसमें सोशल मीडिया का बहुत बड़ा हाथ था। उस समय प्रधान मंत्री पद के दावेदार श्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया के माध्यम से नौजवानों को बड़ी संख्या में अपनी विचारधारा से जोड़ा और वोट के रूप में परिवर्तित कर अपनी राजनीतिक पार्टी को बहुमत दिलाने में सफलता प्राप्त की; क्योंकि श्री मोदी जानते थे कि आज का भारत युवाओं का देश है और आज का युवा अधिकांश समय सोशल मीडिया से जुड़ा रहता है।

सोशल मीडिया हर तरह कि सूचनाओं का निर्बाध प्रसार करता है। सूचनाओं का प्रसार होना भी चाहिए। आज के युग में सेन्सरशिप को गलत माना जाता है लेकिन हमको समाज और देश के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास भी होना चाहिए। ऐसी सूचनाओं, चित्रों तथा वीडियो आदि जिनसे सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय अखंडता को खतरा हो, को शेयर करने से बचना चाहिए।

कई बार किसी दर्दनाक हादसे की हूबहू तस्वीरें साझा कर दी जाती हैं, जिन्हे देखकर मन विचलित हो जाता है, तो कभी किसी सेक्स स्केंडल की वीडियो और तस्वीरें साझा कर दी जाती हैं । कोई भी यह ध्यान नहीं

रखता की इनका प्राप्तकर्ता किस आयु वर्ग का होगा और उन पर इसका क्या असर पड़ेगा।

सोशल मीडिया पर पल पल आते संदेशों से हमारे मन मस्तिष्क में भी भाव क्षण-क्षण बदलते रहते हैं । एक पल में कोई देशभक्ति का संदेश आता है तो हमारा खून जोश मारने लगता है तो दूसरे ही पल कोई धार्मिक संदेश हमें शांति का पाठ पढ़ाने लगता है, अगले ही पल किसी सुंदरी के चित्र के साथ शायरी से दिल रूमानियत से भर ही रहा होता है तो अगले ही पल किसी खतरनाक बीमारी से पीड़ित बच्चे कि मदद का संदेश दिल को करुणा के सागर में डुबो जाता है तो अगले ही पल कोई मजेदार चुटकुला सभी भावनाओं को कुचलता हुआ आपको हंसने को मजबूर कर देता है । ऐसे में "दिमाग का दही हो जाना" स्वाभाविक है।

सोशल मीडियापर कुछ भी साझा करते समय अत्यधिक सावधान रहने कि जरूरत है, परंतु अधिकांश लोग बिना इस बात कि परवाह किए कि वो किसी कानून का उल्लंघन कर रहे हैं और किसी अपराध को बढ़ावा दे रहे हैं, चित्रों और विचारों को पोस्ट करते रहते हैं। इसका उदाहरण देखिये -

लड़कियों के नाम से बनाए गए फेसबुक पेजों पर लड़कियों की तस्वीरें शेयरकरके लोगों से उन्हें लाइक करने के लिए कहा जाता है, और पूछा जाता है "कैसीलग रही हूँ ?"

कुछ समझदार लोग अपनी बुद्धि (???) का पूरा परिचय देतेहैं पसंद और टिप्पणी करके। ऐसी ही एक फोटो पिछले माह शेयर की गई थी।वह फोटो एकनाबालिग लड़की की थी जिसे अब तक एक लाख से अधिक लोग पसंद (लाइक) कर चुके हैं और चार हजार के करीब ने इसे शेयर भी किया है। इस फोटो पर अब तक 96 हजार से अधिक टिप्पणियां भी आ गई हैं।

यह पेज न सिर्फ फेसबुक की कम्यूनिटी गाइडलाइंस का खुला उल्लंघन कर रहा हैबल्कि नाबालिग लड़कियों की तस्वीरें पोस्ट करके उन्हें संभावित सैक्सअपराधों का शिकार बनने के खतरे में भी डाल रहा है। इस तरह के पेज कालोकप्रिय होना यह भी दर्शाता है कि भारत में इंटरनेट जागरूकता कितनी कम है।लोग ऐसी तस्वीरों को फेसबुक की गाइडलाइंस के तहत रिपोर्ट करने के बजाएउन्हें लाइक करते हैं या उन पर टिप्पणियां करते हैं।

जरा सोचिए एकनाबालिग बच्ची की तस्वीर डालकर पूछा गया कि कैसी लग रही हूँ तो उसकी तारीफकरने के लिए पुरुषों की लाइन ही लग गई। 96 हजार से अधिक टिप्पणियां आ गईंऔर युवकों ने तमाम तरह के खूबसूरत शब्द उसकी तारीफ में जड़ दिए। गौर करनेवाली बात यह है कि यहाँ लाइक और क्लिक करने वाले लोगों को नहीं पता है किअनजाने में वो अपराध कर रहे हैं। वो ऐसी पोस्ट को बढ़ावा दे रहे हैं जिसमेंतस्वीर में दिख रही बच्ची से बिना पूछे ही उसका फोटो सोशल नेटवर्किंग केजरिए साझा किया जा रहा है।

यदि भविष्य में आपके सामने इस तरह की कोईतस्वीर आए तो बेहतर है कि आप उसे फेसबुक को रिपोर्ट करें ना की लाइक याकमेंट करके अपनी नासमझी का परिचय दें।

सोचिए जिस नाबालिग बच्ची कोदेखकर आप के अंदर का 'हवस का शैतान 'जाग रहा है, यदि कल को उस जगह पर आपकीबेटी या बहन का फोटो होगा तब आपको कैसा लगेगा ? सो जैसा दर्द या गुस्साआपको अपनी बहन, बेटी के फोटो को देखकर आएगा, फिर वो आपको किसी और की बहन, बेटी की सरेआम नुमाइश देखकर क्यों नहीं आता ?आखिर वो भी तो किसी की बहनबेटी है..

इसी प्रकार व्हाटसप पर मुझे एक संदेश मिला एक जानवर विशेष और धर्म विशेष की रक्षा के संबंध में। जिसमे एक अन्य धर्म विशेष पर भड़काऊ टिप्पणी भी की गई थी और उस संदेश को आगे प्रेषित करने का दबावपूर्ण आग्रह किया गया था। मजे कि बात यह थी कि इसे मेरे एक ऐसे मित्र ने भेजा था जो उस जानवर विशेष के रास्ते में आ जाने पर तब तक आगे नहीं बढ़ता था जब तक दो-तीन डंडे या घूंसे उसको ना मार ले। अरे भाई! जब उस जानवर विशेष को इतना पवित्र और पूजनीय मानते हो तो उसका सुबह शाम दूध निकालकर बाहर आवारा घूमने और कूड़े कचरे से अपना पेट भरने को क्यों छोड़ देते हो ? अपने घर में रखकर बढ़िया चारा खिलाओ, हम भी देखें वहाँ से कौन कसाई उसका वध करने के लिए ले जाता है ?

ऐसे लोग धर्म की रक्षा के लिए एकता की बात करते हैं लेकिन खुद ही भेदभाव बनाए रखना चाहते हैं। यह ब्राह्मण है, यह क्षत्रिय, यह वैश्य, यह शूद्र। इनकी भी उपजातियाँ - यह उच्च वह नीच, छूत-अछूत । आरक्षण के समर्थक, आरक्षण के विरोधी। सभी जातियों और उपजातियों के अपने-अपने भगवान और महापुरुष हैं और बड़े ही गर्व से अपने को दूसरों से

श्रेष्ठ बताने वाले चित्र संदेश व्हाटसप और फेसबुक पर चलायमान रखते हैं। अब बताइये एकता स्थापित कैसे हो ?

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें सोशल मीडिया का प्रयोग करते समय संयम एवं विवेक से काम लेना चाहिए। झूठी और भ्रामक बातों के प्रसार का हिस्सा नहीं बनना चाहिए। जितना सम्मान आप अपने और अपने धर्म के प्रति अपेक्षित रखते हैं उतना ही दूसरे व्यक्ति और धर्म को भी दें। यदि कोई भड़काऊ और आपत्तिजनक चित्र या संदेश वेबसाइट पर दिखे तो तुरंत उसको हटाने के लिए रिपोर्ट करें।

अभी कुछ दिन पहले एक फिल्म में संवाद सुना था कि **"सोशल मीडिया धीरे-धीरे इतना व्यापक और शक्तिशाली होता जा रहा है, ऐसा ना हो कि यह इस देश में गृह युद्ध का कारण बन जाए।"** जिस प्रकार के संदेश और चित्र सोशल मीडिया पर उन्मुक्तता के साथ आजकल प्रसारित हो रहे हैं, उन्हे देखकर लगता है कि फिल्म के संवाद कि यह आशंका कहीं सच ही साबित न हो जाए।

इसलिए अपने देश और समाज के प्रति अपने दायित्वों का ध्यान रखें एवं सोशल मीडिया पर कुछ भी शेयर करने से पहले उसके प्रभाव के बारे में अवश्य सोचें।

मनीष कुमार
पूर्व वरिष्ठ अनुवादक, वर्तमान हिन्दी अधिकारी, स्थानांतरित

आधुनिकता की आड़ में परंपरा

याद करो उस दिन को बंदे जब ना थे बिजली खंभे
लालटेन लैंप जला करते थे
घर घर खाट बिछा करते थे ।
मध्यम मध्यम हवा थी आती
भीगे तन मन बदन सुखाती
लोग इकट्ठे चैपालों में
गप्पों से दिल को बहलाते ।
आज शमा कुछ और हो गया
आधुनिकता ने जमा पहनाया
हर घर टीवी, फ्रिज और एसी
मोबाईल तो सबसे देशी ।
लोग तभी घर से हैं निकलते
जब बिजली अवरुद्ध हो जातए
नहीं तो वो खुद में ही मगन है
दूसरों से उनको क्या जतन है ।

लोकेश कुमार मिश्रा, डाटा एंट्री ऑपेरेटर ग्रेड A

संदेश

फिल्म में किरदार हो अभिनेता या अभिनेत्री
इशारे पर चलते हैं डायरेक्टर के सर्वोपरि
पैसे और शोहरत पाने की उन्हें कशमकश
दरियादिल जनता दिलाते हैं उन्हें सम्पूर्ण यश।

क्रिकेट हो या बैडमिंटन संगीत हो या मंचन
दर्शक उनके शॉट्स के दीवाने होते हरके क्षण
मेहनत से कमाए रूपय से टिकटें हैं खरीदते
पर आज वही दर्शक रूपय को दर दर हैं भटकते।

इसी बीच एक शख्स ने जगाई एक आशा की उम्मीद
ट्वीटर और इंस्टा ही नहीं जमीं पर आकार सुनी चींख
नाम है 'सोनू सद' और काम भी कर रहे हैं 'शुद्ध'
सड़कों पर श्रमिकों के साथ खड़े हैं जैसे योद्धा और दूत।

लोकेश कुमार मिश्रा, डाटा एंट्री ऑपेरेटर ग्रेड A

अवसाद से निजात

है याद मुझे अब भी वह दिन, जब नीरसता ने दी दस्तक ।
हर काम बड़ा यू लगता था, मानो एक पर्वत हो सर पर ।।

मन में सपने थे ढेरों पर, दिन यू कैसे बीत जाते थे।
ऐसे जीवन में बार-बार,क्यों मरने के दिन आकते थे ।।

वर्षों तक झेला में इसको , बस एक किरण की आस लिए ।
आखिर वह दिन भी आ ही गया, मैं बढ़ा पूर्ण प्रयास किये।।

संकट तो यूं ही आएंगे, ढेरों बाधा दिखलाएंगे ।
जीवन की बैंड बजाएंगे, जीते जी मौत दिखाएंगे ।।

पर जग में सच्चे वो है नर, जो मौत को आँख दिखाते हैं ।
संघर्ष भरी इस दुनियाँ में, लोगों को खुश कर जाते हैं ।।

लोकेश कुमार मिश्रा, डाटा एंट्री ऑपेरेटर ग्रेड A

पिशाच

एक बुढ़ा व्यक्ति था जिसका नाम रामदीन था,वो प्रत्येक दिन पर्वत के पीछे वाले नदी पर स्नान करने जाया करते था । एक दिन उन्हें रास्ते में एक सोने के सिक्कों से भारा घड़ा मिला,तभी उसी ओर दो भाई आ रहे थे। तब रामदीन ने उन दोनों भाईयों से कहा की बेटा उस ओर मत जाना क्यू कि उस ओर एक पिशाच बैठा है, यह कहकर बुढ़ा व्यक्ति वहाँ से भाग गाया तब लड़कों ने कहा ये तो एक कमजोर बुढ़ा है और काफी डरपोक भी हम तो जवान है चलो चलकर तो देखें वहाँ जाकर वहाँ कौन सा पिचाश है । जब वे वहाँ पहूँच कर देखते है तो वहाँ एक सोने से भरा घड़ा था वो दोनों उसे देख बहुत खुश हो जाते है लेकिन दोनों भाईयों के मन में उस सोने से भरे घड़े के प्रति लालच आ जाता है। वे दोनों सोचते हैं की क्यू ना मैं इस घड़े को अकेला ले लू , इस लिए बड़ा भाई ने छोटे भाई भाई को कहा की भाई अब धन तो मिल ही गया है क्यू ना थोड़ा कुछ खा लिया जाये तू छोटा है नीचे के गाँव जाकर अपने लिए कुछ खाने को ले आ , छोटा भाई बड़े भाई की बात मानकर नीच गाँव रोटी लाने चला तो गया लेकिन वह सोच रहा था की भैया कही सारा धन अकेले तो नहीं ले लेंगे तो क्यू नहीं मै उनके खाने में जहर मिलाकर उन्हे खिला दूँ ताकि वो मर जाएँ और मै पूरा धन अकेले ले लू इधर बड़ा भाई ये सोच रहा था कि जैसे ही छोटा भाई आयेगा मै उसे धोखे से डंडे से मारकर उसकी जान ले लूँगा और इस तरह से पूरा धन पर मेरा कब्जा हो जाएगा । इधर छोटे भी ने खाने में जहर मिला कर खाना लेकर जैसे ही आया बड़े भाई ने उसे डंडे से मारकर उसकी जान ले ली । छोटा भाई के मरने पर बड़े भाई को बहुत खुशी हुई और उसने सोचा कि अब तो पूरा धन मेरा ही है तो क्यू नहीं इस खाने को खाकर धन लेकर चला जाता हूँ और इस तरह दोनों भाई उस धन रूपी पिशाच कि वजह से मारे जाते है । शायद इस लिए रामदीन ने उन्हे कहा था कि वहाँ मत जाना वहाँ पिशाच है ।

मनोज कुमार पासवान, कनिष्ठ अनुवादक

प्रसिद्ध दोहे हिंदी अर्थ सहित

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।

अर्थ: जब मैं इस संसार में बुराई खोजने चला तो मुझे कोई बुरा न मिला। जब मैंने अपने मन में झाँक कर देखा तो पाया कि मुझसे बुरा कोई नहीं है।

तिनका कबहुँ ना निन्दिये, जो पाँवन तर होय,
कबहुँ उड़ी आँखिन पड़े, तो पीर घनेरी होय।

अर्थ: कबीर कहते हैं कि एक छोटे से तिनके की भी कभी निंदा न करो जो तुम्हारे पांवों के नीचे दब जाता है। यदि कभी वह तिनका उड़कर आँख में आ गिरे तो कितनी गहरी पीड़ा होती है !

दोस पराए देखि करि, चला हसन्त हसन्त,
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।

अर्थ: यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देख कर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते जिनका न आदि है न अंत।

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।

अर्थ: यदि कोई सही तरीके से बोलना जानता है तो उसे पता है कि वाणी एक अमूल्य रत्न है। इसलिए वह हृदय के तराजू में तोलकर ही उसे मुंह से बाहर आने देता है।

संत कबीरदास

वर्ष 2020-22 में प्रवीण/प्राज्ञ/पारंगत तथा हिन्दी टंकण प्रशिक्षण उत्तीर्ण अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम:-

क. प्रवीण

1. श्री देबाशीस चक्रवर्ती, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
2. श्री संकर चक्रवर्ती, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
3. श्री देबाशीस बरुआ, सहायक पर्यवेक्षक
4. श्री मदन पाइन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
5. श्री बिनय गाएन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6. श्री हिमांग्शु गोस्वामी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7. श्री सुदीप गुहा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
8. श्री निर्झर पाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
9. श्री आनंद कुमार माझी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
10. श्री प्रभात कयाल, सेवानिर्वृत्त एम.टी.एस
11. श्री सुवोजित रॉय, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
12. श्री मोहन लाल चक्रवर्ती, डी.ई.ओ 'ए'

ख. प्राज्ञ

1. श्री चिरंजीत बोस, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
2. श्री अरण्य घोष, डी.ई.ओ 'ए'
3. सुश्री अर्पिता मण्डल, लिपिक
4. श्री सुभाशीस बेनर्जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
5. श्री निर्झर पाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6. श्रीमति प्रतिभा मण्डल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ग. पारंगत

1. श्री सुबीर कुमार नंदी, सेवानिर्वृत्त सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
2. श्री तापस बिस्वास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
3. श्री गौरांग घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4. श्री सुजीत बागची, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
5. श्रीमति सुदेशना बागची, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6. श्री प्रोबाल बेनर्जी, पर्यवेक्षक

घ. कम्प्युटर पर हिन्दी प्रशिक्षण

1. श्री लोकेश कुमार मिश्रा, डी.ई.ओ 'ए'
2. प्रभाकर अग्रवाल, पूर्व कनिष्ठ अनुवादक
3. श्री रवि कुमार, डी.ई.ओ 'ए'
4. श्री अरण्य घोष , डी.ई.ओ 'ए'
5. श्री नीरज कुमार, डी.ई.ओ 'ए'
6. श्री मनीष कुमार, पूर्व वरिष्ठ अनुवादक

वर्ष 2020-22 में सेवानिर्वृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची।

1. श्री सौमेन्द्रनाथ मुखोपध्याय/वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
2. श्री अशोक कुमार/वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
3. श्री तापस कुमार रॉय/वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4. श्री रबिन्द्रनाथ ओराओ/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
5. श्री अमिताभ सिन्हा चौधुरी/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6. श्री देबाशीश चट्टोपाध्याय/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7. श्री जयदेब चक्रवर्ती/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8. श्री बिस्वजित पान/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
9. श्री आर.पी श्रीवास्तव/ एम.टी.एस
10. श्रीमति चुनी सत्पथी/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
11. श्री प्रभात कायल/एम.टी.एस
12. श्री तेनजिंग ज्ञास्तों/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
13. श्री सेखार चन्द्र सुर/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
14. श्री अरुण प्रसाद/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
15. श्री वृन्दावन सहा/ लेखापरीक्षा अधिकारी
16. श्री तुषार कांति चक्रवती/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
17. श्री सुबीर कुमार नंदी/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
18. श्री देबाशीश बरुआ/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
19. श्री दीपक कुमार पाल/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
20. श्री दिलीप कुमार रक्षित/ लेखापरीक्षा अधिकारी
21. श्री सुनील कुमार शुक्ला/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
22. श्री देबाब्रत तपादार/व्यक्तिक सचिव
23. श्री देबाप्रसाद रॉय/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
24. श्री स्वरूप मुरमु/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
25. श्री अलोक कुमार ताह/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
26. श्री पार्थ गुहा // सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
27. श्री अरबिंदो बिस्वास/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
28. राजकुमार/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
29. श्री आनंद कुमार माझी/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ऑफिस पिकनिक २०२१

प्रिंट और डिजाइन: ई डी पी अनुभाग, कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा: पूर्वी रेलवे
14, स्ट्रांड रोड: कोलकाता - 700001